श्रीमान् पंडित सुखानंदजी शर्म्मा.

हिन्दी साहित्य ग्रन्थावली

वर्ष १. ग्रन्थ ४.

नित्य दर्शन ।

लेखक—

राठोड अचलसिंह लालजी

फोरेस्ट ओफिसर आबूरोड.

सम्पादक व प्रकाशक—

बी. पी. सिंघी—आबूरोड.

वीर सं. २४४५] विक्र. सं. १९७६ [ई. स. १९१९

ग्रन्थावलिका वार्षिक मूल्य २) मूल्य प्रति एक ।≈)

"जैन विजय" प्रेस—सूरत ।

निवेदन ।

इस ग्रन्थावलीका तृतीय ग्रन्थ आपकी सेवामें भेजा जा चुका है अब इसका चतुर्थ ग्रन्थ **नित्य दर्शन** आपकी सेवामें भेजा जाता है। जिन२ महाशयोंने इसका वार्षिक मूल्य अभी तक नहीं भेजा है वे कृपा कर रु. २) मनीआर्डर द्वारा भेजे व वी. पी. भेजनेको पत्र द्वारा सूचित करें।

मैनेजर—
हिन्दी साहित्य ग्रन्थावली
आबूरोड.

प्रकाशकका वक्तव्य।

—❦—

प्रिय पाठकगणो! मैं अपनी ग्रन्थावलिके नियमानुसार आप लोगोंकी सेवामें भिन्न२ विषयके उपयोगी ग्रन्थोंको रखता जाता हूँ जिनको आप सर्व आद्योपान्त पढ़ते ही होंगे। आज इस चतुर्थ ग्रन्थको लेकर आपकी सेवामें उपस्थित होता हूँ जिसका सम्बन्ध अध्यात्मसे है। मुझे आशा है कि पाठक गण इस पुस्तकका इतना ही अधिक लाभ उठाएंगे जितना कि वे दूसरी पुस्तकों द्वारा उठा रहे हैं।

आपका

बी. पी. सिंघी

प्रकाशक—आबूरोड.

अर्पण पत्रिका।

परमप्रिय स्वर्गवासी बंधुवर

पंडित सुखानंदजी शर्म्मा

सज्जनवर! यह आपके सतसंगका ही फल है कि यह छोटीसी पुस्तक निर्माण करनेका सुअवसर सेवकको प्राप्त हुआ है। अतएव यह पुस्तक सप्रेम आपकी परमपवित्र सेवामें अर्पण है।

अर्बुदारण्य

आपका बन्धु-
अचलसिंह लालजी
राठोड

प्रस्तावना।

नित्य दर्शनमें मात्र ईश्वर प्रार्थना है। इसमें प्रस्तावना की विशेष आवश्यक्ता नही हैं। किन्तु आजकलकी प्रथानुसार हरेक पुस्तकके पहिले प्रस्तावना लिखनेका नियम सा हो गया है विना प्रस्तावनाके तो वह पुस्तक ही सुमार नहीं होती। अतएव प्रस्तावनामें कुछ न कुछ अवश्य लिखना उचित है।

सच वात तो यह है कि 'नित्य दर्शन' नित्य कर्मके पूर्वकी क्रिया है। अर्थात् नित्य कर्म करनेके पूर्व समय २ पर बताया हुआ पाठ बराबर आंतरिक भावसे किया जाय तो अपने इष्ट देवके जप और ध्यानके समय, मन उसी लयमें मग्न हो जाता है जिसका आनन्द वही जान सकता है जो इसका अनुभव करता है।

यह कहावत हमारे पूज्य भारतमें प्राचीन कालसे प्रचलित हैं कि अंते मति सा गति अर्थात् अन्तकालमें जैसी भावना होती है उसके अनुसार उसकी गति होती है। जिसके अनेक उदाहरण हमारी धार्मिक पुस्तकोंको अवलोकन करनेसे ज्ञात हो सकते हैं। इसी कारण हमारे ऋषि मुनिओंने त्रिकाल संध्या करनेका नियम बनाया है। इसी भाँति हरेक धर्ममें नियम प्रचलित है। जिसके अनुसार यदि कोई मनुष्य सप्रेम करता रहेगा तो शनैः शनैः उसके हृदय मन्दिरमें परमात्मा प्रति शुद्ध प्रेमका अंकुर प्रकट

होगा और नित्य अभ्यास रूपी पोषण मिलता रहनेसे अंकुरका परिवर्तन वृक्षमें होगा जिससे पियूष सम स्वादिष्ट फल चखनेका सुअवसर मिलेगा। प्रातःकालकी संध्याके पश्चात मनुष्यका मन चारपांच घंटे तक परमात्माके स्मरणमें कुछ न कुछ लगा रहता है। जब कुछ चलित होने लगता है इतनेमें दुपहरकी संध्याका समय आजाता है। और तत्पश्चात् सायं काल। इसी भांति नित्य अभ्यास करनेसे परमात्माका स्मरण हरघड़ी बराबर चलता रहता है और मन प्रेममय और शान्तिमय हो जाता है। उसका हृदय हमेशा परमानन्दमें मग्न रहता है। किन्तु पाठकवर, यदि तोते सा पाठ किया जाय तो परिश्रम व्यर्थ ही समझना चाहिये। जैसी आपकी भावना होगी वैसा ही फल प्राप्त होगा। यह निर्विवाद बात है।

अन्तकालमें सत् अभ्यासीका हृदय प्रभुमय होता है और अन्तमें उसीमें लीन हो जाता है।

पाठक, सच पूछिये तो यह छोटीसी पुस्तक सेवकने अपने ही अभ्यासके हेतु बनाई थी। किन्तु हिन्दी साहित्य ग्रन्थावली-के प्रकाशकके अनुरोधसे सर्व साधारणके लाभार्थ पाठकगणोंके सन्मुख रखता हूं। यदि पाठकवर प्रेममय सत् भावसे इसका पाठ करके लाभ उठावेंगे तो सेवक अपने श्रमको सफल समझेगा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

आबूरोड राज्य
सिरोही राजपुताना। } 'आनन्द'

ॐ

नित्य दर्शन

राग कालिंगडा ।

१

॥ मैं तो पिया समरन मसतानीरे ॥ टेर ॥

प्रेम पियाला भर भर पिवुं ।

निशदिन रहुं गुल्तानीरे॥ १ ॥

रोम रोममे स्वामि समाया ।

निरखे हरप भरानीरे ॥ २ ॥

अतुल "आनन्द" प्रिया संग पाऊं ।

वाहिका ध्यान धरानीरे ॥ ३ ॥

राग एजन ।

२

॥ प्रिया जागत मैं कैसे सोऊं ॥ टेक ॥

जो सोवनकी चाह करूं तो,

अपने धर्मको खोऊं ॥ १ ॥

स्वामि सेवा करू प्रेमसे ।

सत सुख शामसे मोहूं ॥ २ ॥

चमकत शाम निज मन्दिरमें ।

वा दर्शनसे सोहूं ॥ ३ ॥

वार बार मैं लेत बलैयां।
सुंदर शाम रिझोइं ॥ ४ ॥
आनन्द अनहद शामसे पाऊं।
वासे मनवा पिरोऊं ॥ ५ ॥

राग भैरवी।

३

समरन निजको मनवा विचार ॥ टेर ॥
कोटि मुखनसे नित निज सरन, होवन वो चितधार ॥ १ ॥
बहुत उतरपे प्रेमसे थिर हो, सुन तूं ध्वनि अपार ॥ २ ॥
अहोनिश नाद अगम बहु गाजे, अजब प्रेमको तार ॥ ३ ॥
प्रेम करेसे प्रेम हि पावे, अलख प्रेमका सार ॥ ४ ॥
असिम आनन्द यामे समायो, भवजल तारनहार ॥ ५ ॥

राग एजन।

४

जगमें प्यरे तूंहि सतसार ॥ टेक ॥
भाइबंध सुत दारा दौलत, सबहि छूटनहार ॥ १ ॥
कुडिरे दुनिया झूठी माया, अंत फसावनहार ॥ २ ॥
अपना तो सुपना करि मानो, सबहि मतलब यार ॥ ३ ॥
तुहितो प्यारे सब कुछ मेरा, तुहि जीवन सार ॥ ४ ॥
आनन्द एक तेरे रटनमें, तुहि तारन हार ॥ ५ ॥

राग आशा।

५

अपना भेद विचारो, सजनवा, अपना भेद विचारो ॥ टेर ॥

देह नहि देह तन्तु नाहि, मन बुद्ध नहि अहंकारो ॥ १ ॥
तन तन्तु सब अपने कहता, खेलत सबसे न्यारो ॥ २ ॥
आपहि बोलत भेद न पावे, तमसे आप विचारो ॥ ३ ॥
यतन कर तूं निज घर पाने, यह तो विदेस है सारो ॥ ४ ॥
पगपग रपट अति है कठोरा, पावत दुख अपारो ॥ ५ ॥
अगुआ संगले पथ बहुतेरे, सत् पथको उर धारो ॥ ६ ॥
आनन्द आपहि आपमें पावे, सत चेतन मतवारो ॥ ७ ॥

राग एजन ।

६

क्या हित जगमें आयो, सजनवा, क्या हित जगमे आयो ॥टेर॥
कुकर सम तूं इत उत डोलत, क्या यह चितमें भायो ॥ १ ॥
मृगजलमे तुं खावत गोते, क्या सार जनम यह पायो ॥ २ ॥
भूलो भंवर पड़े ते प्यारा, निज हित जो उर ठायो ॥ ३ ॥
चेत सजनवा समे, कर तेरे, कर तूं जा हित आयो ॥ ४ ॥
ग्राम ठगनमे खैर न तेरी, जो गफलतमें आयो ॥ ५ ॥
जनम सफल कर लाल संभारी, जा हित जुग जुग धायो ॥ ६ ॥
चेतन संगसे चेतन पावे, आनन्द वामे समायो ॥ ७ ॥

गजल ।

७

छोडके दयालु देव कौण शरण जाऊं ।
आधार एक तेरो श्याम, तेरो नाम गाऊं ॥ टर ॥
धरन करन परमनाथ, हरन ताप राऊं ।
एक देव एक सेव, देव यह बनाऊं ॥ १ ॥

अगम अलख तूंहि नाथ का विध गुन गाऊं।
एक नाम पूरन काम ठाम यह थपाऊं॥ २॥
घट घट पट पटके बीच निरखि मैं रिझाऊं।
तन्तु सर्व तनमे तूही, तुंही तुंही गाऊं॥ ३॥
तूहि साकार निराकार सार सत पाऊं।
शरण आया नाम ध्याया, परमधाम पाऊं॥ ४॥
तारन तरण अभर भरन चरण शीश नाऊं।
चेतन शाम आनन्द धाम अलख नाम ध्याऊं॥५॥

प्रातःकालकी प्रार्थना

परमप्यारे परमात्मन्! तिमरयुक्त घोर निशामें मेरी पूर्ण रक्षा करके आजका प्रातःकाल दिखाया। दयालु दाता! इस दासपर यह तेरी पूर्ण अनुग्रह और करुणा है। जिसके अर्थ, परम प्यारे परमात्मन्, तेरी परम पवित्र सेवामें मैं करयुग कोटिशः धन्यवाद अर्पण करता हूँ। आजके दिन भरमें मैं अपने भ्रातृगणोंको सप्रेम अपने ही माफिक समझूं। तन मन व वाक्से प्राणी मात्रका हित चाहता रहूँ। कारण कि, दयालु दाता, सबमें तेरा ही वास है। संसार मात्रमें तेरा ही प्रकाश फैल रहा है। यह घट मन्दिर तेरा ही है। इसमें जो प्रकाश है वह, परम प्यारे दाता, तेरा ही है जिसके द्वारा यह पंचभूत युक्त पुतला विविध कार्य्य करता है। संसार मात्रके चेतन तथा जड़

पदार्थ तेरेही द्वारा विद्यमान है। दयालु देवा, अति दया व करुणा करके तेरे और मेरे बीच जो अटूट परदा है उसको सदाके वास्ते हटा दे जिससे तेरा अपूर्व और सुखमय प्रकाश देखकर असीम आनन्द व शान्तिको प्राप्त करूं, ॐ ॐ ॐ। और मैं और तू का जो प्रबल भेद है वह सदाके वास्ते निर्मूल हो जाय और निज नामका गान करता हुआ चिरकाल तेरे प्रेममें मगन और मस्त बना रहूँ। ॐ ॐ ॐ। इस मन्दिरमें जो अहोनिश नाना-प्रकारका व्यापार भिन्न२ व्यक्ति द्वारा होता है उसका मैं साक्षीभूत हूँ। कर्त्ता नहीं। प्यारे प्रियतम, संसार मात्रको शान्ति दे जिसके द्वारा नानाप्रकारका कलह, भ्रान्ति और तिमर सर्वथा निर्मूल हो जाय। ॐ ॐ ॐ। द्वेषभाव और भ्रान्तिका परिवर्तन शान्ति आनन्द और भ्रातृभावमें होजाय जिसके द्वारा सांसारिक जीवन स्वर्गीय जीवन होजाय। अहा! दयालु देवा, वही जीवन धन्य है जिसमें मात्र तेरी ही क्रिया आवश्यक है। दयालु दाता, तेरी इच्छा पूर्ण हो। ॐ ॐ ॐ। हरि ॐ, हरि ॐ। प्यारे अविनाशी सर्व शक्तिमान प्रियतम और घट घट व्यापक परमात्मन तुझे कोटिशः नमस्कार है। श्वासो श्वासपर जो आनन्दमय सतनाद होता रहता है उसको समझनेका अपूर्व ज्ञान प्रदान कर। परमा-त्मन्, तेरी इच्छा पूर्ण हो। तुझे वारंवार नमस्कार करता हूँ और तुझे वारंवार धन्य है।

चौपाई।

कोटिशः धन्यवाद तोय राया। सुखमय भोर मुझे दिखलाया ॥१॥
तोय नमुं प्रभु सत करतारा। तेरी माया अपरंपारा ॥२॥

जाके लखे निज ज्ञानको पावे। भरम तिमर छिन में मिट जावे ॥३॥
कर मन शान्त जो ध्यान लगावे। अलख ज्योति नसनसमें पावे ॥४॥
आगे तिमर होत अजुआला। दरश अनुपम हो ततकाला ॥५॥
यह सत वस्तु समझ सिहाना। "आनन्द" आपहि आप समाना ॥६॥

दोहा।

यह घट मन्दिर ईशका, तेरा नहि तिलभार ॥
अहोनिश लखदाता, हृदय, प्रेमसे वारंवार ॥ ७ ॥

चौपाई।

कोई कहे उत्तर मुख कीजे। आनन्दसे हरि ध्यान धारीजे ॥१॥
कोई पश्चिमकी राह बतावे। तहां मुख करिके ध्यान लगावे।२।
पूरुव दिसा बतावे कोई। ध्यान धरे मन चाहवे सोई ॥ ३ ॥
दक्खिन दिसा नीच करी माने। घोर तिमर घटमें करि जाने।४।
सबहि दिसा ईशकी मानो। सब घट भीतर नाथ समानो ॥५॥
जड़ चैतनना नाथसे न्यारे। विश्व सभी उसके आधारे ॥ ६ ॥
सब घट बोलत परम पियारा। सत भक्तनका वो हितकारा ॥ ७ ॥
दयानाथ अरु करुणा सागर। परम पियारा नटवर नागर ॥ ८ ॥
पथ विध विधसे जगत समाजा। ध्नान धरत सुधरत सतकाजा ॥९॥
पूरन प्रेमसे जो कोई ध्यावे। प्रियतम अपना रूप बनावे ॥१०॥
परमानन्द तबहि नर पावे। आवागमनको तुरत मिटावे ॥११॥
जगमें एक और नहि दूजा। नाना रूपमें निजको हि पूजा ॥१२॥
एकहिमें सब रूप समावे। घटमें झिलमिल ज्योत बढ़ावे ॥१३॥
एक हि नामा। एकहि आनन्द आप समाना ॥१४॥

तत्पश्चात् इष्टका जप और ध्यान ॥

॥ उसको उसका अर्पण करो। शान्ति चितमें हरदम झरो ॥

दुपहर अथवा मध्यान्हकालकी प्रार्थना।

राग सोरठ

कोटि नमन करूंरे तोय करतार ॥ टेक ॥
भाईबंध गुरूजन भी तूंहि सत परिवार ॥ १ ॥
प्रियतम प्राणाधार है मेरा, सत शान्ति आगार ॥ २ ॥
अशरण शरण तूं अभर भरन है, जगका तूंहि आधार ॥३॥
घटपटकी जानत सब कहानी, तमको छेदन हार ॥ ४ ॥
मोय आसरा तेरा दाता, अवर नहिं आधार ॥ ५ ॥
मांगत भिक्षा तेरे प्रेमकी, अपने हाथ पसार ॥ ६ ॥
चमकत है चेतन सब घटमें, आनन्द सत आगार ॥ ७ ॥

प्रियतम ! तेरी लीला अपरम्पार है। संसारमें अनेक ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, पण्डित आदि हुए जिन्होंने तेरी अगम लीला समझनेके वास्ते नाना प्रकारके यत्न करनेमें अपनी सारी आयु पूर्ण करी किंतु अन्त न पाया। ॐ ॐ ॐ। सत्‌प्रेमीने निजघर पाया पर चुप कर गया। लोनकी पुतली महासागर भेटने गई तो तत्काल एक रस हो गई। अपना रूप वो नाम गुमा करके प्रियतम को प्राप्त कर सकता है। किंतु तेरी क्रिया विना नहीं। ॐ ॐ ॐ। इस क्षण भंगुर संसारमें, दयालु दाता, तेरा ही आसरा है। मेरा सर्वस्व तू ही है। मैं मात्र तेरे ही प्रेमकी भिखारिन हूँ। हाथ पसार कर तेरे द्वार पर खड़ी हूं। परम प्यारे प्रियतम ! तेरी

इच्छा हो सो कर। ॐ ॐ ॐ। प्राणाधार मेरी जीवन डोरी तेरे ही करमें है। जैसी तेरी इच्छा हो उस भाँति, प्रिय चतुर नटवा, तू इस पुतलीको नचाव। ॐ ॐ ॐ। मैं संसारके प्राणी मात्रकी शान्ति चाहुं, सबका कल्याण इच्छूं और सबको अपने समान समझूं ऐसी प्रेरणा नित्य किया कर। परम प्यारे परमात्मन्! द्वैत अंधकारको सदाके वास्ते निर्मूल करके तेरे अद्वैत प्रकाशका अनुभव करा जिससे में अपूर्व शांति तथा आनंदको ५ करूं। प्रियतम! तेरी इच्छा पूर्ण हो। तेरी परम पवित्र सेवामें १। कोटिशः नमस्कार अर्पण हो। जिस स्थितिमें तू मुझे रखता है, उसीमें आनंद मान कर तेरा गुण गाता रहूं। ॐ शांतिः शांतिः। तत्पश्चात् इष्टका जप व ध्यान।

कवित।

भक्तिके अनेक भेद, विश्वमें विख्यात स्वामि ॥
जानुं न एक हुं नाथ, शरण तव आयो है ॥
चाहे तो निभाय लइयो, चाहे न निभाइयो नाथ ॥
जानत हे दाता तूही, घटमें समायो है ॥
भायो एक नाम तेरो, ध्याऊं नित प्रेम करी ॥
तेरोही आधार स्वामी, चितमें समायो है ॥
गायो जिन नाम तेरो, बेड़ो भवपार भयो।
अपनायो आनन्द करि, धन्न जग रायो है।

२

हिरदे हो प्रेमहीन, भरिये उर प्रेम नाथ।
डोरि निज हाथ तेरे, तूंहि खींचन हार है ॥

कठपुतली मानव है, नटवा चतुर तूही ।
नाचत ज्युं नचावे नाथ, तेरो कारोबार है ॥
कहता जग पुन्य पाप, जाने न भेद जाको ।
भेदको भिदया तुही, अगम वो अपार है ।
बांह गहे तेरी जो, वाहिको निभाय लेता ॥
आनन्द तव चरणमें, बलिहार वारवार है ॥

सायंकालकी प्रार्थना ।

चौपाई ।

शांति दाता देव दयाला । जगको शांति दे किरपाला ॥१॥
हम सब नाथ आधीन तिहारे । या जगको प्रभु तूं रखवारे ॥२॥
याचत नाथ चरणकी सेवा । दइओ नाथ अरज सत देवा ॥३॥
और चाह नहिं देव दयाला । जानत घटघटकी किरपाला ॥४॥
तूंहि स्वामि सब जगमें व्यापक । सुखशांति अरु सतका स्थापक ॥५॥
अगणित गुनका तू भण्डारी । वारवार प्रभुं जाउ वारी ॥६॥
घटपटमें तूं कर अजुआला । निर्मूल तिमिर होय तत्काला ॥७॥
तम तज सत्यज्ञानको पाऊं । वो दिन नाथ मैं धन्य कहलाऊं ॥८॥
रोम रोम ध्वनि सत गाजे । अलख नाद निजमें हि सुनावे ॥९॥
पुलकित गात गाऊं सत गाना । निजमें ही नाथ नितसुख माना ॥१०॥
तूंहि आतम परमातम स्वामि । आनन्द दाता अन्तरयामी ॥११॥

शामकल्याण ध्रुपद ।

ॐ नामुं निरंजन, तुं दुःख भंजन ।

गंजन पाप अमाप तूं श्रीधर ॥ टेक ॥

तूंहि रूप अरूप, भूपनके भूप, गुन अगण आगार अपार अनूप।
भर भर गागर प्रेमसे सरवर ॥ १ ॥

एक तूंहि आधार, मेरो सतसार, सुखशान्ति अपार तूंहि तूंहि दातार।
कर कर सहाय जगकी तूंहि नटवर ॥ २ ॥

तेरी गति अपार, को न पाय पार, चारूं ही लाचार करे नेति पुकार,
हर हर तिमिर जगका तूंहि ईश्वर ॥ ३ ॥

सतचेतन आप, सब हरन ताप, सत प्रेम करी करूं तेरो जाप
कर कर आनन्द जगमे प्रभु कर कर ॥ ४ ॥

राग कल्याण।

तूंहि प्रभु जगमें है सतसार ॥ टेर ॥

सब घटपटमें तूहि बिराजे, खेल खिलावन हार ॥ १ ॥
आरत ध्यान नहि कछु जानत, एक हि नाम आधार ॥ २ ॥
तव इच्छापर जीवन मेरा, जानत सत किरतार ॥ ३ ॥
और न मांगत नाथ निरंजन, जित चितमें दीदार ॥ ४ ॥
सम करि चेतन व्यापे जगतमें, आनन्द यामे अपार ॥ ५ ॥

आनन्द अपार, तो नामके गावे ॥ टेर ॥

नामकी महीमा अपरंपारा, प्रेम करि नित गावे ॥ १ ॥
अधम भी समरे प्रेमसे नामा, सत पदको वो पावे ॥ २ ॥
नाम खस्त्र है सुरां हन्दा, पांच वो तीन भगावे ॥ ३ ॥
कल्पवृक्ष है गुन हरि नामा, मन इच्छित फल पावे ॥ ४ ॥
चेतन आप हि आपमें व्यापे, आनन्द निजमें पावे ॥ ५ ॥
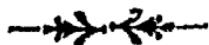
प्रार्थना।

परमप्यारे परमात्मा ! तुझे सादर कोटिशः नमस्कार है। परमात्मन् यह तेरी ही दया है कि इस समयकी प्रार्थना करनेके अर्थ मुझे यह सुअवसर दिया। अतएव तेरी परमपवित्र सेवामें मेरा कोटिशः धन्यवाद अर्पण हो। ॐ ॐ ॐ। दयालु दाता ! तू अवश्य ही दया और करुणाका सागर है। सन्त और असन्त दोनोंका पोषण करता है। प्यारे दाता ! इस संसारमें तू सर्वत्र समभावसे व्यापक है। तो बिन एक अणुमात्र भी खाली नहीं है। ॐ ॐ ॐ। परमात्मन्, जिसने तेरी अपूर्व भक्ति रूपी पियूष पयपान किया है वही इसका अनुपम स्वादको समझ सकता है अन्यथा नाहीं। ॐ ॐ ॐ। दयालु देवा संसारके प्राणीमात्रको ऐसा दिव्य अनुराग करनेकी प्रेरणा कर। तबहि संसारमें अपूर्व शान्तिका प्रसार होगा ॐ ॐ ॐ। मेरा तू ही आधार और तू ही रक्षक है। परम दयालु स्वामी, इन्द्रियों द्वारा उनकी रुचि अनुसार जो कुछ कार्य होते हैं उन तमामका मैं शाक्षी हूं कर्त्ता नहीं। परम दयालु अन्तरयामी, संसारमात्रमें अपूर्व शांति और आनंदका प्रचार कर। परमात्मन् तेरी इच्छा पूर्ण हो। तुझे कोटिशः नमस्कार है। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

जप................ध्यान

आनंद आनंद ॐ आनंद आनंद

सोते समयकी प्रार्थना।

चौपाई

करयुग नमन करूं तोय देवा॥
प्रेम पियूष रस पावन देवा॥ १॥
नमो नमो किरतार निरंजन॥
शांति स्थापक अरिदल गंजन॥ २॥
स्वामी मैं नित–शरण तिहारे॥
सब प्राणिनके तुम रखवारे॥ ३॥
तीन कालमें जागन हारे॥
धन धन निज जनके प्यारे॥ ४॥
अगम अगोचर तू अविनाशी॥
सत पथ प्रेमको तू ही प्रकाशी॥ ५॥
अकल गुण तव का विध गाऊं॥
का विध सत पथको मैं पाऊं॥ ६॥
तू हि सत अगुआ नाथ हमारा॥
ओर नहीं सेवक आधारा॥ ७॥
जब मैं आपको तन बताऊं॥
सेवक शाम तेरो कहलाऊं॥ ८॥
आतम आप लखूं मैं दाता॥
तुम मुझ बीच भेद नहिं त्राता॥ ९।
अंगोपाँग सभी हैं हमारे॥
चेतो सदा है मुझसे न्यारे॥ १०॥
तत्व सार घट भीतर राजे॥

अनुपम नाद वाहीमें गाजे ॥ ११ ॥
जाके लखे शान्ति सत पावे ॥
मेहर करि गुरु देव बतावे ॥ १२ ॥
नहिं तो जगमें फिरे भुलाना ॥
कर कंकण खोजे पथ नाना ॥ १३ ॥
सुख कारन भटके दिन राता ॥
तब हि तात निराशा पाता ॥ १४ ॥
तन तनु जामें जो सुख मानो ॥
सुख साधन दुःख देत सिहाने ॥ १५ ॥
जग वित्त नित है सुखिया भाई ॥
पल पल उलटि ठोकर खाई ॥ १६ ॥
राजपाटमें जो सुख माने ॥
मृग तृष्णामें रहा भुलाने ॥ १७ ॥
समरन सदा शामको कीजे ॥
प्रेम पियाला भर भर पीजे ॥ १८ ॥
को, दिन मेहर होइ सत गुरकी ॥
राह मिले सहजे सतपुरकी ॥ १९ ॥
यह सुख तात अखंड कहावे ॥
पुनि पुनि जनम मरण नहिं पावे ॥ २० ॥
ऐसे सत गुरु दीन दयाला ॥
बोलत निज घटमें किरपाला ॥ २१ ॥
गुरु शिष्यका भेद मिटावे ॥
सब ठौरन में आप समावे ॥ २२ ॥

नमस्कार प्रभु वारं वारा ॥
भव जलमें प्रभु आप सहारा ॥ २३ ॥
चेतन शामकी नित बलिहारी ॥
आनन्द बोध अति सुखकारी ॥ २४ ॥
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।

प्रार्थना ।

ॐ पूर्ण ब्रह्म परमात्मन् सत् चिदानंद, अलख अविनाशी, तुझे वारंवार सविनय नमस्कार करता हूं । तेरी परम पवित्र सेवामें मेरे हार्दिक धन्यवाद अर्पण हों। परमदयालु देवा, इस घोर रात्रिमें नाना प्रकारके प्रकाशमय स्वप्न देखूं यह दाता तेरी ही अपरंपार लीला है। प्यारे, निरंजन निराकार परमात्मन्, तिमिरयुक्त पर्देको सदाके अर्थ निर्मूल करके अलख प्रकाशका अनुभव कराओ। दयालुदेवा ! संसार मात्रमें मानव विविधरूपमें अपनी अपनी इच्छानुसार तेराही ध्यांन करते हैं और तेराही नाम स्मरण करते हैं। दयालुदाता ! जगतमात्रके प्राणिओंको शान्ति दे, शान्ति दे, शान्ति दे । कलह और कुसम्प संसारमेंसे सदाके वास्ते निर्मूल कर दे, परमात्मन, तीनों अवस्थामें मात्र तेरा ही ध्यान रहे और तेरे ही सत नामका जाप को अहोनिश चलता है उसी ओर मेरी रुचि कर, यह ही नम्र याचना है । परमात्मन् तेरी इच्छा पूर्ण हो।

शांति ! शांति ! शांति !

आनन्द ॐ आनन्द ।

नित्य विचारयोग्य बातें ।

१. परम प्यारे परमात्माको नित्य अपनेमें ही समझ। संसार मात्रमें उसीका प्रकाश है।

२. जिस भांति तू परामात्मासे प्रेम रखता है उसी भांति वह भी तेरे साथ रखता है। यह तो स्वच्छ आइना जैसा है जैसा मुख वैसाही दृश्य। ॐ।

३. अपने जीवनका पूर्ण आधार परम दयालु परमात्मा पर रखकर अपने विचारोंको श्रेष्ठ और पवित्र रख। कारणकि यह ही प्रतिध्वनि है। ॐ। ॐ।। ॐ।।।

४. मानव विचार बीजोंके समान हैं। जैसे फलकी इच्छा हो वैसा बीज बो। ॐ। ॐ।। ॐ।।।

५. परम प्यारा परमात्मा, जड़ किंवा चैतन सबमें बराबर विद्यमान है। अतएव किसीको नीच समझकर घृणा न कर।

६. निन्दा, चुगली, और झूठी नुकताचीनी करना प्रथम तो कर्त्ताके वास्ते अति हानिकारक है। कारण कि ऐसे नित्य अभ्याससे अपना स्वभाव तद्वत हो जाता है। ॐ ॐ ॐ।

७. अयोग्य संगत मत कर। किन्तु अयोग्यको योग्य बनानेका यत्न कर। ॐ। ॐ।। ॐ।।।

८. प्राणि मात्रको मत सताओ कारण कि उनमें भी परम प्यारे परमात्माका निवास है। ऐसा स्वभाव हानिकारक है।

९. जिस कार्य्यसे हानि होनेका संभव हो उसको सत्वर त्याग दे। ॐ। ॐ।। ॐ।।।

१०. किसीकी बात सुनकर उसके अनुसार कार्य्य मत कर। किन्तु उस पर पूर्ण विचार करके और दोष गुणका निर्णय करके कार्य्य कर। ॐ! ॐ!! ॐ!!!

११. परकी सेवा स्वसेवा समझ और इसको अपना हेतु समझ। ॐ! ॐ!! ॐ!!!

१२. अनाथोंकी सहायता करनेके अर्थ हार्दिक यत्न कर।

१३. अपना हृदय पवित्र और निर्मल रख।

१४. सदा निडर, प्रमाणिक, उद्यमी, धैर्य्यवान, हिम्मतवान और मधुर भाषी बन।

१५. वीर्य्य इस तनका महाराजा है जिसकी रक्षा करने में अंगोपाँग बलवान बने रहते हैं। और व्यर्थ व्यय करनेसे नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं जिससे मानव जीवन बोझरूप बन जाता है। जैसे राजाके निर्बल होनेसे उसका राज्य नष्ट हो जाता है उसी भांति वीर्य्य निर्बल होनेसे शरीरके तमाम अंगोपांग शिथिल हो जाते हैं। और अंतमें जीवित रहते हुए भी ऐसे मनुष्य मुर्दा ही के बराबर होते हैं।

१६. अति स्त्री संगसे तो प्रत्यक्ष हानि है ही। किन्तु इससे भी अधिक हानि इसका चिंतवन करनेसे है। इससे नाना प्रकारके रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनका मिटाना अति कठिन है। अतएव यह उत्तम है कि न तो इसका चिंतवन करे, न ऐसी पुस्तक पढ़े और न एसी संगत करे।

१७. स्त्री संगका मुख्य कारण सन्तान उत्पत्तिका है। अतएव ऋतु समयके पश्चात् नियमानुसार इसी भावसे स्त्री संग

करना चाहिये। उस समय जैसा स्त्री पुरुषका भाव तथा विचार होगा, वैसा ही बालक पैदा होगा। अतएव यह उचित बात है कि उस समय दोनोंके हृदयमें परम पवित्र और निर्मल विचार होने चाहिये।

१८. स्त्री संग होनहार सन्तान उत्पन्न होनेके प्रयोजनसे ही करना चाहिये। मौज अथवा शौकके खातिर नहीं।

१९. मनुष्यमें जितना वीर्य्य भण्डार अधिकतासे रक्षित होगा, उतना ही वह कल्याणदाता होगा।

२०. कपट, प्रपंच, लोभ, क्रोध, खुशामद, स्वस्तुति, झूठ, मद इत्यादिक दुर्गुणोंसे बचा रहे। ॐ! शान्ति!! ॐ!!!

२१. ऐसे दुर्गुण जंगके समान हैं। जैसे लोहको जंग खा जाता है उसी भांति ऐसे दुर्गुणयुक्त प्रकृति बुद्धिको मलिन करती जाती है जिससे सदगुणोंका परिवर्तन दुर्गुणोंमें हो जाता है।

२२. संसार मात्रमें एक ही शक्ति कार्य्य करती है। मात्र उपयोगमें भिन्नता है जैसा उपयोग वैसा ही परिणाम। जैसे पानी एक है उसमें जैसा रंग डालोगे वैसाही होगा।

२३. संसार मात्रमें मुख्य दो प्रकारके मनुष्य हैं। एक कर्मवादी, दूसरा ईश्वरवादी। कर्मवादी अपने वर्तमान जीवनका आधार पूर्व जन्मके कर्मों पर रखता है। और ईश्वरवादी दयालु परमात्माकी इच्छा पर ही अपने जीवनका आधार रखता है।

२४. दोनोंका आशय नाना प्रकारके सतकर्म्म द्वारा अपने भविष्य जीवनको उन्नत करनेका है।

२५. संसारमें अनेक धर्म हैं जिनका मुख्य सिद्धांत परमात्माकी प्राप्ति है। जैसे विविध गिरी शिखरोंसे अनेक नदी नाले निकलते हैं। थे कितने ही टेढे बांके क्यों न हो किन्तु सबका हेतु महासागरमें मिलनेका है अन्य नहीं। ॐ। शान्ति!! ॐ!!!

२६. अतएव किसी अन्य धर्मवालेके साथ कदापि द्वेष भाव मत रखो। सबको अपने समान एकही तीर्थस्थानको जाने-वाले यात्री ही समझ।

२७. यह प्रदेश हमारा वतन नहीं है। हम लोग विविध व्यापारके अर्थ आये हैं। अन्तमें तो हमको अपने वतनको अवश्यही जाना होगा। अतएव अपने साथ लाये हुए द्रव्यको पूर्ण संभाल कर ऐसा व्यापार कर जिसमें खूब मालदार बनकर अपने वतनको जाओ। यदि विवेक और श्रद्धासे व्यापार नहीं किया तो अपने साथ लाये हुए धनको गुमाकर खाली हाथ अति दुःखी होकर अपने वतनको लौटना होगा।

२८. इस नगरके पहाड़में अनेक डाकू हैं और तेरे पास अमूल्य हीरा है। यदि संमहल कर नहीं चला तो सदाके वास्ते लुट जावेगा। इस पथमें होकर सफलताके साथ वीर पुरुष ही जा सकते हैं कायर नहीं। अतएव वीर बनकर इस रास्तेको पार कर।

२९. इस राहमें यात्रीको भुलानेके अर्थ अनेक पगडंडी हैं। अतएव विवेकसे अनुभवी अगुओंको अवश्यही अपने साथ रख। अन्यथा अपना रस्ता भूल गया तो पुनः प्राप्त होना कठिन है। ॐ! ॐ!! ॐ!!!

२०. संसार मात्रके प्राणी सुखकी प्राप्तिके वास्ते कटिबद्ध होकर यत्न करते हैं किन्तु सुख कहाँ। विवेकके अभावसे सुखके साधनके स्थानमें दुःख प्राप्तिका साधन करते हैं और इसमें अचरज यह है कि इसको सुखका साधन मान करके ही उद्यम करते हैं। जैसे "सुई गुमाई चोकमें हेरत फिरे बजार"। अतएव वस्तु स्थानका विचार करके साधन कर।

२१. एक बार किसी मनुष्यको कोई देखले तो कुछ समयके पश्चात् पुनः भेंट होनेपर उसको पहिचान सकता है। किन्तु अति अचरजकी बात है कि वह अपने आपको नहीं पहचान सकता है। अतएव सत द्वारा अपने आपको पहचाननेका यत्न कर।

२२. सहवासी तेरे हैं और साथ रहते हुए भी तुझसे भिन्न हैं। इसपर विवेकसे विचार करके अपने आपको पहचान।

२३. घर और उसमेंकी तमाम वस्तु तू अपनी कहता है किन्तु तूं वस्तु नही है। सदा सबसे अलग है और सबसे युक्त भी है। सज्जन विचार कर।

२४. दोषोंका शोधक दोषी होता है। इसपर विवेकके साथ विचार कर।

२५. संसारिक द्रव्य कूड़ा कचरेके समान है जितना बढ़ेगा उतनाही लालको छिपाता जायगा जिसकी प्राप्तिके अर्थ तूने यह जन्म धारण किया है। अतएव लालको प्रत्यक्ष करनेका उद्योग कर।

२६. आयनेको सदा स्वच्छ रख जिससे तूं निजकी छबिको भली प्रकार देख सके।

२७. कपड़ा यदि साफ है तो उसपर इच्छानुसार रंग

चढ़ सकता है अन्यथा नहीं। इसी भांति यदि हृदय निर्मल और पवित्र है तो निज ज्ञान रंग भली भाँति चढ़ सकता है। जितनी स्वच्छतामें न्यूनता होगी उतनी ही ज्ञान प्राप्तिमें न्यूनता होती है। यह तो प्रतिध्वनिके समान है जैसा कहेगा वैसा ही सुनेगा।

३८. जितना प्रेम तू परम प्रिय परमात्माके साथ रखता है उतनाही प्रेम दयालु दाता तेरे साथ रखेगा और उसी भांतिसे रखेगा जिस भांतिसे तू रखता है। यह नियम तो स्वच्छ आइनेके समान है जैसा मुख वैसाही दृश्य।

३९. यदि तू चाहे कि संसारके प्राणी मात्र तुझसे प्रेम करें तो तू प्रथम उतना ही प्रेम स्वच्छ हृदयसे उनकी ओर अपने घटमें उत्पन्न कर।

४०. सूर्यका प्रकाश सब वस्तुओं पर बराबर पड़ता है। किंतु जो स्वच्छ और दाग रहित हैं वे विशेष प्रकाशमान होती हैं। भिन्नता गुणमें है आकारमें नहीं।

४१. निज घरकी ओर लेजानेवाली मायाको विद्यामाया कहते हैं। जो दो प्रकारकी है अर्थात् विवेक और वैराग्य। यह दोनों सत्पथमें उत्तेजित करनेवाले हैं।

४२. भ्रांति और भंवरमें डालनेवाली मायाको अविद्यामाया कहते हैं। जिसके छः भाग हैं अर्थात् काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और अहंकार। यह सब निज घरके वास्ते प्रबल अरगलि हैं। सत्पथके यात्रीको चाहिये कि इनको रोकनेका प्रबंध करे।

४३. ग्रंथ ग्रंथिके समान है। कारण कि विवेक रहित पढ़नेसे अहंकार और हलकापन उत्पन्न करता है। जिसके द्वारा मनमें अनेक ग्रंथियोंका जन्म होता है। अतएव विवेक द्वारा पढ़े और गुरूगमसे सत्यासत्यका निर्णय करना फलदायक है। ॐ ॐ ॐ।

४४. सज्जन, नाशवान प्राणी पर अपना आधार मत रख। कारण कि वह स्वयं मर रहा है। अतएव अपना आधार पूर्ण श्रद्धा और प्रेमके साथ परम प्यारे परमात्मा पर रख जो रोम रोमसे विद्यमान है।

४५. प्रकृति देवी इस संसारको वारंवार जता रही है कि यह देह गेह और अन्य पदार्थ क्षणभंगुर हैं। अतएव दैव इच्छासे किंवा प्रालब्धानुसार प्राप्त हुए कर्मोको करता हुआ अविनाशीका सप्रेम स्मरण कर। इसीमें कल्याण है।

४६. अधिक धन प्राप्त करनेके लालचमें इत उत कूकर समान भागनेसे क्या लाभ? मिलेगा उतना ही जितना इस सप्रेम उद्यम करनेका तेरा अधिकार है। किन्तु फलपर दृष्टि रखनेका नही।

४७. जो कुछ अपने उद्यम द्वारा प्राप्त होवे उसपर पूर्ण सन्तोष रखकर परम प्यारे परमात्माको सप्रेम हार्दिक धन्यवाद दे। कारण कि सन्तोषके बराबर आनन्द दायक और कोई वस्तु नहीं है।

४८. सन्तोषी मनुष्य सदा सुखी रहता है वह चिन्तासे सदा दूर रहता है।

४९. मनुष्य संसारिक द्रव्यके अर्थ नाना प्रकारके कष्ट सहन करता है। किन्तु अलख धनके अर्थ मात्र जिव्हासे बकवाद

करता है। हृदयसे सप्रेम नहीं। अतएव प्राप्ति असंभव है।

५०. संसारिक सगे सहोदरोंके वियोगमें मनुष्य नाना प्रकारका विलाप करता है। किंतु परम प्यारे परमात्माके वियोगमें विरला ही अपनी नेत्रोंको सजल करता है।

५१. एक पैसेके खो जानेसे मनुष्यका हृदय अति दुःखित होता है। किंतु सच्चा हिरला पानेका पथ न मिलनेसे मनुष्य किंचित् मात्र भी दुःखी नहीं होता है। अति अचरज है।

५२. भजनका नियम संसारिक कार्यके अर्थ मानव तोड़ देता है। किंतु संसारिक कार्यको भजनके वास्ते नहीं।

५३. शारीरिक व्याधिको दूर करनेके हेतु मानव नाना प्रकारके उपाय करता है। किंतु भविष्य जीवन बिगाड़नेवाले अज्ञान रूपी घोर व्याधिको निर्मूल करनेके हेतु कोई उपाय नहीं किया जाता है। अतएव अनुभवी अगुआ द्वारा इस पथकी खोज करनी चाहिये।

५४. प्रेमियोंके वास्ते यह पथ अति सुगम है और अप्रेमीके वास्ते अति कठिन है। अतएव प्रेमी होकर प्रेमीको देख। ॐ! शांति!! ॐ!!!

दोहा।

दोष निहारे अवरमें, होवत तद् अनुसार ॥
जैसी जाकी भावना, फलत न लागे वार ॥ ५५ ॥
अन्तर सत धरिकेमना, ना कर दुष्ट विचार ॥
जैसी कहे वैसी सुने, यह प्रतिध्वनि सार ॥ ५६ ॥

उत्तम वस्तु वणजिय, उत्तम अर्पै सार ॥
आंबां देवे मिष्ट फल, किकर देवे खार ॥ ५७ ॥
इतनो सत्य विचारिय, आप सत्य बन जाय ॥
जाको समरन नित्य करे, वही रूप बन जाय ॥ ५८ ॥
कीट भ्रगीके संगमें, वाको करे विचार ॥
कीट भ्रगी हो जात है, एसो समरन सार ॥ ५९ ॥
अपने भावको शुद्ध कर, शुद्धही रख व्यवहार ॥
तातें निर्भय होयगो, अपने आप निहार ॥ ६० ॥
जल टपकत कांने घड़े, त्यों आयु वह जाय ॥
हरि रटन कर मानवी, पल पल प्रेम लगाय ॥ ६१ ॥
काल अचानक आयगो, ज्यों चिड़ियां विच वाज ॥
मनकी मनमे रहे वसी, सरसी नहि को काज ॥ ६२ ॥
गॉधर्व दानव देवता, सभी काल गल जाये ॥
मानव चारो कालको, समय पाय चर जाय ॥ ६३ ॥
हरि समरन अहोनिश करो, भित्तर नैन लगाय ॥
प्रकटे साहेब प्रेमसे, काल भय मिट जाय ॥ ६४ ॥
दुर्लभ मानव देहडी, भटके पाई अमूल ॥
जनम मरणके कष्टको, मानव कर निर्मूल ॥ ६५ ॥
अन्तरपटमें साहेबो, करदरशन करि खोज ॥
अनहद आनन्द पावसी, करे अनोखी मौज ॥ ६६ ॥
देवाँने दुर्लभ देही, सहजे पाई आप ॥
साहेबमें सेवक मिले, कटे चोरासी पाप ॥ ६७ ॥
जो दीखत संसारमें, सबमें राम समाय ॥

अलगा भासे तिमिरसे । मानव रहे भुलाय ॥ ६८ ॥
हेरो घट तजि बाहेरको, जो निज साहेब ठाम ॥
साहेब निरख्या पट टले, सुधरें सारे काम ॥ ६९ ॥
भूलेसे भूले नहि, अन्तर मन्तर एक ॥
पुनि विसरत अज्ञानसे एकहि लखे अनेक ॥ ७० ॥
अँग उपांग तू नहीं, नहीं बुद्धि नही मन ॥
जान अजान तो तूंही है, आतम आप सजन ॥ ७१ ॥
अकर्मी मर्मी अति, पुनि कर्ता कहलाय ॥
गगन चढे झांकी करे, अपने आप दिखाय ॥ ७२ ॥
मानवसे पशु कीटलो, उत्तम समझत आप
पुनि पुनि विसरत आपको, आपही पोषत ताप ॥ ७३ ॥
अचरज अति अचरज कहूं, पुनि पुनि विसरत आप ॥
अवर वस्तु विसरत नहि, ज्यों मणि मणिधर साप ॥७४॥

सोरठा

तन तन्तु व्यापार, जो सज्जन निशदिन चले ।
तूहि चलावन हार, ज्ञाता भेद अभेदको ॥ ७५ ॥
इन्जिन कियो तयार, उदक अगन वामे भरे ।
चले न यंत्र लगार, विना चलावन हारके ॥ ७६ ॥
तन तन्तु तयार...., सुंदर छब अति दीखता ।
हिले नहिं तिल भार, आतम परमातम् विना ॥ ७७ ॥
तू जग आतम सार, अन्तर मुख होई लखे ।
अवर नहि आधार, आतम तत्वके ज्ञान विन ॥ ७८ ॥

गज़ल

ए दीन दयाल प्यारे, उर टेर धर ले मेरी।
रख चरणमें तिहारे, कहता है दास टेरी ॥ टेर ॥
माता पिता तो तूही, भ्राता स्नेहि मेरा।
सच्चा समंध प्यारे, इस जग्तमें है तेरा ॥ ॥१
तू ही तो शिव वो शक्ति, ब्रह्मा वो विष्णु प्यारा।
तू ही नबि पेगम्बर, जगका तो तूही सहारा ॥ २ ॥
देखूं नजर फिराकर, वहां तूहि तूं मोरारी।
खेले तूं नाना रंगमें, वाहवा मेरे बिहारी ॥ ३ ॥
चाहता हुं मैं तो हरदम' तुझ चर्णकी तो सेवा ॥
नहिं और चाह है मेरी, जाने तू सर्व देवा ॥ ४ ॥
तुझ प्रेमकी पियाली, पी कर बनुं मस्ताना ॥
तेरी अखण्ड धुनमें, गाता फिरुं दिवाना ॥ ५ ॥
आनन्द व्यापे अनहद, तेरे नशेमें प्यारा ॥
बजता रहे तार निशदिन, पीता पियुष धारा ॥ ६ ॥

राग सोरठ

(२)

झूठो जुग लागेरी, सुंदरशाम ॥ टेर ॥
माया छांया है मेघनकी, सरकत आठो याम ॥
भवजलमें एक तारक तुही, हृदय निवासो शाम ॥ १ ॥
राजपाट धन धाम अटारी, अरू परिवार तमाम ॥
कालचक्र जब आयके घेरे डूबत सगरी हाम ॥ २ ॥
भारतमें पारथको दीनो, सत उपदेश तमाम ॥

माया अनलसे तुंने बचाया, धन गिरधर घनश्याम ॥ ३ ॥
गूढ ज्ञान गीता समझायो, सतेज करी उर हाम ॥
ठिक करि स्थिर थाप्यो निजमें, पारथको घनशाम ॥ ४ ॥
भय भ्रान्ति सब टारो दयाला, अर्पो अविचल ठाम ॥
आनन्द नित रहे तेरे चरणमें, मांगत यह घनशाम ॥ ५ ॥

राग

(३)

हरि तेरि गत है नाना (२) रहा जगवामें उलजना ॥ टेर ॥
कहिं भूप बन मुकट धरे शिर, कहीं दीन बन जाना ।
कहिं वृक्ष अरु गिरवर सरिता, नाना भेष बनाना ॥ १ ॥
कहिं योगी कहिं बनत सन्यासी, कहीं भोगी मोज उडाना ।
असंख्य रूप धरिधरिके दाता, आपहि आप मिटाना ॥ २ ॥
दुनिया तोमे तूं दुनियामे, अचरज खेल बनाना ।
आनन्द आप समाया घटमें, प्रेम करी झट पाना ॥ ३ ॥

सोहनी ।

३

नर नाम नारायण नित जपो, वो अधम ओधारन हार है । } टेर॥
सरिता जल सम जीवन जाता, ओर न रोकन हार है ॥ }
स्वप्ना सम दुनियाकी माया, दुख दरियाव अपार है ।
नारायण नैया है निर्भय, पार उतारन हार है ॥ १ ॥
भव्य भुवन तूं भूला भरममें, भव भटकावन हार है ।
शरण लिय बिन सत साहेबका, महल मिलन दुसवार है ॥ २ ॥
यह घर ज्ञानी गूढ मतलबका, समझे समझणहार है ।
आनन्द अगम अलख अगोचर, समर समर हर बार है ॥ ३ ॥

गजल सोरठ।

४

जिन नाम निरंजन ना लिया, वृथा जनम जगमे गिया। || टेर
बी हाथ आया हीरला, लख कांच वाको गुमा दिया ||

कहां गय वे बादशाह, मालिके तख्तो ताज थे।
अफसोस प्यारे अजलने, नामो निशान मिटा दिया || १ ||

जोधा थे जहाँमे कवी बडे, रण खेतमे थे वे लडे ||
अजलने अफसोस उनको, मिट्टी मेही मिला दिया || २ ||

जगमें धनी थे सेकड़ों, वे एंश करते फूलकर।
खाली खड़ी हैं हवेलियां, उन्हें खाखमें हि दबा दिया || ३ ||

रहे न कवि शायर दिलावर, धनपति अरु बादशाह,
जोगी जति अरु सिद्ध सादक, आय फिर लोटा दिया || ४ ||

कर एक हि एकको याद प्यारे, राम वह अल्लाह चाहे।
करे याद जो आनन्दसे तूं, भरम दुःख मिटा दिया || ५ ||

|| क्या संसारमें सुख है ?

गरबी

प्यारे मथन करो तन सागर सत्य विचारके रे।
त्यागो माया तिमिर असार,
बंधौ ढुंढो सतसुख सार, तत्व विचारके रे || टेक ||

शिशु वयमें जब आप थे, माता थनसे प्यार।
सतसुख समझें वाहिमें, आनंद पाय अपार ||

बदला वो सुख समयके साथ अवर चित धारकेरे।
लखा सुख खेल खिलोना साथ || १ ||

यह बाजी भी स्थिर नहि, बदलत लगे नवार।
किशोर वयके बाल संगे, खेलत खेल असार ॥
समझे यामें सतसुख सार, हर्ष उर लायकेरे।
रहे यामें मस्त अपार ॥ २ ॥
खेल खिलोने सब गय, बाल हृदयसे दूर।
विद्या पठनन मन लग्यो, तन मन प्रेमसे पूर ॥
निशदिन पोथी किनी मित्र चितमें धारकेरे ॥
पढत गुन उदर पोषण काज ॥ ३ ॥
युवा भयो अब तन खिले, बदला सुखका ढंग।
पोथी पटकी ताकमें, अब रस लग्यो अनंग ॥
जोडा निज कर रामा साथ, अनंग रस चाखनेरे ॥
समझा यामें सत सुख सार ॥ ४ ॥
अनंग रस परिणाममें, फल पाया दो चार।
अब चिंता वित्तकी लगी, नाना करत विचार ॥
डोलत नित चित वित्त लगाय, बन्यो अति बावरोरे ॥
लीन अलीन न चितमें धार ॥ ५ ॥
कौडिकर कोटिकिय। लालच बढयो अपार ॥
टका धर्मका जानकर। मानत सुखका सार ॥
कहेनित मेरो है धन धाम अति अभिमानसेरे।
कुकर सम गलियां फिरे गवार ॥ ६
अंगोपांग शिथल भय। थर थर कम्पत काय ॥
नैण करन उत्तर दियो। बुढवा होत हसाय ॥
चले अब डगमग डिगते पांऊ दुखि फिरे बावरोरे।

करे नित स्वजन तो अपमान ॥ ७

खाट ढलाइ पोलमे । वा पर बूढवा विराज ॥
अवर भय घनके धणी । बिगडे बुढवा काज ॥

अब तो चितमे उदास नर पसतायकेरे ।
भई अब गलानि सुख संसार ॥ ८

सतसुख कारन बहुं मथ्यो । पायो ना तिल भार ॥
फस गया उलटा भंवरमे । भुगते कष्ट अपार ॥

सत सुख रहे गयो दूर मिथ्या जालसेरे ।
खोया रतन अमूल सार ॥ ९ ॥

सत सुख नित है निकटमे । अनजाने बहुं दूर ॥
एक तरणके ओटमे । राजत है सत नूर ॥

निज घटहि सुखका मूल । विवेकसे हेरनारे ॥
पावे सत जीवनको सार ॥ १० ॥

हाथ रहनदे काममे । हृदय साहेबजीं संग ॥
सफल जनम तब होयगो । पडे न सत सुख भंग ॥

आनन्द हरि जप अर्थ अपार प्रेमसे जो करे रे ॥
पावे सत सुख अटल अपार ॥ ११ ॥

गजल (कवाली) ९

यतन तूं करले प्यारे । हरि नाम मुंहसे निकले ॥ टेर
निकले गौविन्द प्यारा । तेरी जबांसे निकले ॥
ना जुल्म कर ए जालिम । दुनियाके मखलुको पर ॥
बदला जरूर लेगे । जब जान तनसे निकले ॥ १ ॥

मतलबे यह तन धरेका । कछु दे तूं दे तूं दे दे ॥
होवेगा खाख यह तन । फिर " दे " न मुंहसे निकले ॥ २ ॥
तप दान जप भलाई । गाफिल तूं भूल तमसे ॥
यह गफलत हि तेरा दुशमण । जब घरसे अपने निकले ॥ ३ ॥
एतकाद रख अलखमे । जो आसरा है जहां का ॥
हो इश्कमे लबालब । जब जान तनसे निकले ॥ ४ ॥
दशपांचकी उमरमे । महेबुबको रिजाले ॥
बुझे न भाव कोई । बाहर जहांसे निकले ॥ ५ ॥
यह खेल रास्त बाजी । खेला चाहे तूं खुश हो ॥
दिलबर मिलेगा अपना । खिजाँ जहांसे निकले ॥ ६ ॥
तनमे समाया माशुक । आनन्दसे रिझाले ॥
दिदार तुं पायगा । अज्ञान मनसे निकले ॥ ७ ॥

आशा गोडी ६

जर नहि खोना भाई, चतुर नर । जर नहि खोना भाई ॥ टेर
महनत करि नर माल कमाया । फोगट ना दे लुटाई ॥ १
माल देखि अर्थी सब दोडें । लुटन जर ललचाइ ॥ २
खबरदार जर राख संभारी । को नहि ले फुसलाई ॥ ३
कंजुस कहें जन कर नहि परवा । लख तूं निजकी कमाई ॥ ४
लख चौरासी भोगके दुःखडे, किनी जरकी कमाइ ॥ ५
गफलतमे जो जर खो बैठा । आखिर रहे पसताई ॥ ६
आनन्द अलख रख अंतरमे । भव बाधा मिट जाई ॥

आशा मांडी ७

धन कहां ढूंढन जाय, चतुर नर । धन कहां ढूंढन जाय ॥ टेर

धन हित डोलत इत उत प्यारे । आस निराशा पाय ॥ १ ॥

इतने पर सन्तोष न आवे । भटकत हूं ललचाय ॥ २ ॥

सत धन तो निज घटमें भरिया, तमने तूं बिसराय ॥ ३ ॥

निज कर कुञ्जि खोल कुफलको, अनहद धनको पाय ॥ ४ ॥

भितर खोया बाहर खोजे । या विध तो कर आय ॥ ५ ॥

चेतन धनकी चेतन कुंजि । चेतन आप बताय ॥ ६ ॥

आनन्द पट पलटकर देखो । अनहद धनको पाय ॥ ७ ॥

ॐ ॐ ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

हिन्दी सिविल इंजीनियरिंग पुष्पमाला।

इस पुष्पमाला द्वारा हिन्दी भाषामें इंजीनियरिंग विषयके अमूल्य ग्रन्थ प्रकाशित होंगे। इसमें कई ग्रन्थोंके अनुवाद रहेंगे और कई स्वतंत्र हिन्दी भाषामें लिखाकर प्रकाशित किये जाएंगे। आठ आने प्रवेशक भर कर हरकोई इस ग्रन्थमालाका ग्राहक हो सकता है। ग्राहकों को ग्रन्थमालाकी सब पुस्तकें पौनी कीमतमें दी जायगी:—

सचित्र ॥-सर्वेइंग और लेवलिंग
(भूमापन और पृष्ठ साधन)
प्रथम भाग।

हिन्दी भाषामें भूमापन विद्यापर यह पुस्तक अपने ढङ्गकी निराली ही है। इसमें जरीब यानी चैन (chain) तख्तः मुसत्तः यानी (Plane Table), प्रिजमेटिक कम्पास (Prismatic Compass) और लेवेल (Level) आदि यंत्रों द्वारा पैमायश करनेके तरीके सरल हिन्दी भाषामें अनेक चित्र तथा नकशे देकर बताये गये हैं।

यह पुस्तक पटवारी, सरकल इन्सपेक्टर, नायब तहसीलदार, सर्वेयर, ओवरसीयर, महकमे सेटलमेन्ट तथा फोरेस्टके मुलाजिमोंके लिये उपयोगी है।

मूल्य रु. १) है।

श्री ज्ञान प्रसारक बुक डिपो सिरोहीसे मिलनेवाली पुस्तकें

साक्षात मोक्ष (सदगुणका ग्रन्थ विद्यार्थिओंके पढने योग्य) ०—२—०
जैन तत्वसार (तत्वका रहस्य ,, ,,) ०—४—०
समाधि शतक (योगका अनुपम ग्रन्थ) कच्ची बाइन्डींग ०—४—०
,, ,, पक्की ,, ०—८—०
नई रोशनीकी कुलदेवी (तमाकु देवीका अपूर्व चमत्कार) ०—१—६
मारवाडियोंकी दशा (मारवाडी समाजकी आधुनिक स्थिती) ०—०—६
बुद्धिधन (एक संसारिक नोवेल) .... २—०—०
हिन्दी भाषाभाषी .... ०—०—६
प्लेग सम्बन्धी सामान्य उपचार .... ०—०—६
Jainism not an Antheism 0–0–6
महावीर जीवन विस्तार (उत्तम चरित्र ०-१२-०
दुग्धोपचार (दूध द्वारा रोग मिटानेवाले डाक्टर) .... ०—४—०
मेन्टल टेलेपेथी (विचार द्वारा संदेश भेजनेकी विधि ०—४—०
राजिमति (सति चरित्र) .... ०—४—०
हीपनोटीजम अर्थात सत्व विनियम .... ०—६—०
आरोग्य प्राप्त करनेका नवीन मार्ग .... ०—६—०

मिलनेका पत्ता:—

बी० पी० सिंघी—आबूरोड।

शीघ्र ही छपनेवाली अत्युत्तम पुस्तकें
ग्राहक श्रेणीमें नाम लिखाओ

प्रकाशक—वी० पी० सिंघी आबूरोड।

मुद्रक—ईश्वरलाल किसनदास कापड़िया "जैन विजय"
प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला—सूरत।

प्राप्ति स्वीकार.

१ **मंगलमाल**—सचित्र—लेखक "रसिक" पालनपुर. कीमत ‒)

२ **आत्मानन्द स्तवनावलि**—संशोधक मुनि महाराजजी श्री कर्पूरविजयजी—प्रकाशक बाबू सुमेरमल सुराणा, कलकत्ता। अमूल्य.

३ **आत्महित शिक्षा**—सं० मु. महाराजजी श्री कर्पूरविजयजी—प्रकाशक बाबू सुमेरमल सुराणा—कलकत्ता. अमूल्य.

४ **आत्मकान्ति प्रकाश**—प्रकाशक श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर—कीमत ।)

५ **हंसविनोद**—प्रकाशक श्री हंसविजयजी जैन लायब्रेरी, अहमदाबाद—कीमत ।।।)

६ **श्री नवतत्व संक्षिप्त सार**—प्रकाशक श्री हंसविजयजी जैन लायब्रेरी, अहमदाबाद. कीमत =)

७ **जैन बालोपदेश**—प्रकाशक श्री आत्मानन्द जैन सभा, अम्बाला शहर (पंजाब) कीमत दो पैसे।

हिन्दीसाहित्य ग्रन्थावलीके नियम।

(१) यह ग्रन्थावली प्रतिमास प्रकाशित होती रहेगी।

(२) वार्षिक मूल्य २) रु० रखा गया है।

(३) किसी भी महीनेमें ग्राहक हो सकेंगे परन्तु वह शुरू व... ग्राहक समझा जावेगा और उसको पिछली सर्व पुस्... भेजी जावेंगी।

(४) जिन्हे इस ग्रन्थावलीकी पुस्तक हर महिनाकी १५ ता... तक न मिले तो पहिले पोष्ट आफिससे दरियाफ्त करें और पश्चात् यहांपर सूचित करें।

(५) जिन्हे अपनी पुस्तकें ग्रन्थावली द्वारा प्रकाशित कराना हो वे यहांपर भेजें। सम्पादककी पसंदगी पर उस ग्रन्थको प्रकाशित करनेकी टर्म (शरतें) तय होंगी।

(६) इस ग्रन्थावलीमें जिन्हे विज्ञापन छपवाना हो या बंटवाना हो तो पत्र द्वारा तय करें।

(७) परिवर्तनके मासिक पत्र व पुस्तकें आदि 'सम्पादक हिन्दी-साहित्य ग्रन्थावली—आबूरोड' के पतेसे भेजें।

(८) जो सज्जन रु २५) एक मुश्त देंगे वे इस ग्रन्थावलीके सहायक समझे जावेंगे और एक वर्ष तक ग्रन्थावलीकी सर्व पुस्तकें विना मूल्य दी जावेंगी।

(९) जो सज्जन रु १००) एक मुश्त देंगे वे इसके रक्षक समझे जायंगे और ग्रन्थावलीके सर्व ग्रन्थ विना मूल्य दिये जांयगे।